



30
वर्षों
1985 2015



नीबूवर्गीय फल समाचार पत्र



भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान, नागपुर

खण्ड-2

क्रमांक-2

अप्रैल-जून, 2015

विषय सूची

● निदेशक की कलम से.....	1
● नीबूवर्गीय फल क्षेत्र से.....	1
● संस्थान से	2
● सुझाव/प्रतिसूचना	4

निदेशक की कलम से



प्रिय पाठकों,

नीबूवर्गीय फसलें पूरे देश में उगाई जाती हैं तथा इसकी पौध सामग्री राज्य कृषि विभागों द्वारा नीबूवर्गीय फलोत्पादकों को विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत भारी मात्रा में प्रदान की जाती है। यह पौध सामग्री निजी क्षेत्र की पौधशाला द्वारा तैयार की जाती है तथा लगभग सभी अवस्थाओं में आपूर्तिकर्ता गुणवत्ता एवं रोग मुक्त पौध सामग्री हेतु निश्चित किये गये मानकों का पालन नहीं करते। विदर्भ से उत्तर-पूर्व राज्यों को भी पौध सामग्री भेजी जाती है। उत्तर-पूर्व क्षेत्रों में स्थित कई निजी पौधशालाओं में मानकों का पालन नहीं करती हैं तथा पौध सामग्री रोग संक्रमित पाई जाती है। विषाणु एवं ग्रीनींग जैसे प्रमुख सर्वदैहिक रोग इन पौध सामग्रियों के माध्यम से प्रसारित होती हैं जो कि नये बगीचों के असमय एवं (ह्रास/क्षय) शीघ्र खराब होने का एक कारण है और यह अवस्था कई नीबू उत्पादक राज्यों में देखी गई है। ऐसा महसूस होता है कि राज्य सरकार/बागवानी विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी इस स्थिति को गंभीरता से नहीं लेते हैं तथा इस संदर्भ में इनको सचेत करने का यह उचित समय है। इसी प्रकार का

संक्रमण फाइटोपथोरा के कारण भी हो सकता है जो कि एक मृदा जन्य रोग है। अगर ग्रीनींग, विषाणु रोग एवं फाइटोपथोरा से सुरक्षा नहीं की गई तो स्थितियाँ हाथ से निकल सकती हैं एवं बड़े पैमाने पर नीबूवर्गीय फल वृक्षों का ह्रास वृहत क्षेत्रों में ला सकती है। उत्तर-पूर्व राज्यों में नीबूवर्गीय फल उद्यानों के गिरावट का कारण उद्यानों की उपेक्षा, सिंचाई जल की कमी, कीट की समस्या एवं संक्रमित पौध सामग्री है। संसाधनों की कमी एवं पादप सुरक्षा तकनीकियों के विषय में अज्ञानता भी इसका महत्वपूर्ण कारण है।

यहाँ पर यह इंगित करना आवश्यक है कि भा. कृ. अनु. प.-के. नी. फ. अनु. सं., नागपुर, कृषि विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को रोग नैदानिकी एवं उन्नत पौधशाला प्रबंधन पर प्रशिक्षण भी प्रदान करता है। इस तिमाही में तकनीकी हस्तांतरण के रूप में संस्थान द्वारा मैसर्स एच. यू. गुगले एग्रोबायोटेक कम्पनी, जामखेड़, जिला अहमदनगर (महाराष्ट्र) के साथ एक समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किया गया है जिसके अंतर्गत सूक्ष्म प्रवर्धन (एस.टी. जी.) तकनीकी एवं रोग मुक्त पौध सामग्री का पौधशाला में उत्पादन, जैसे प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण किया जा रहा है।

नीबूवर्गीय फल क्षेत्र से

नीबूवर्गीय फल, विशेषतया नागपुरी संतरे के क्षेत्र में मध्य प्रदेश एवं राजस्थान में भारी विस्तार हुआ है तथा इन राज्यों की सरकारों ने इस फसल को काफी महत्व भी दिया है। हाल ही में कोटा, राजस्थान में एक नीबूवर्गीय फलों हेतु उत्कृष्टता केन्द्र स्थापित किया गया है। इसी प्रकार से एक अन्य नीबूवर्गीय फल उत्कृष्टता केन्द्र बनाने की योजना झालावाड़, राजस्थान में चल रही है। साथ इसी प्रकार के उत्कृष्टता केन्द्र की स्थापना पंजाब में खनौरा, होशियारपुर, पंजाब में इन्डो-इजराइल प्रौद्योगिकी मानकीकरण एवं निदर्शन कार्य योजना के अंतर्गत की गई है। संतरे की नई किस्में (मिखाल, मूरकॉट, डब्ल्यू मूरकॉट, डेजी, पर्ल-टेंजीलो, फ्रेमान्ट एवं फेयरचाइल्ड), ग्रेपफ्रूट एवं मोसंबी (शमोती, अरली गोल्ड, इटाबोरी, वेस्टिन, रूबी न्यूसेलर, ट्रोविटा, वेलेंसीया ओलिंडा, वाशिंगटन नेवल, न्यूहॉल नेवल, लेन लेट नेवल) की पौध रोपण की गई। मूलवृत्तों में वोल्कामेर लेमन, X.639 एवं केरीजो का मूल्यांकन किया जा रहा है। एक नीबूवर्गीय उत्कृष्टता केन्द्र की स्थापना मांगीयाना, सिरसा, हरियाणा में की गई तथा ऊपर दिये गये विदेशी किस्मों का मूल्यांकन भी यहाँ किया जा रहा है। इसी प्रकार नागपुर में डॉ. पी. डी. के. वी अकोला में नीबूवर्गीय उत्कृष्टता केन्द्र की स्थापना वर्ष 2011 से 14 में इन्डो-इजराइल कार्य योजना के अंतर्गत की गई। रोग मुक्त पौध सामग्री उत्पादन हेतु पौधशाला एवं एक मीटर ऊंचे मेड़ पर रोपाई का मूल्यांकन किया जा रहा है। मिजोरम में एक हाईटैक पौधशाला की स्थापना रोग मुक्त पौध सामग्री के उत्पादन हेतु आईजोल में इन्डो-इजराइल कार्य योजना के अंतर्गत की गयी है।

संस्थान से

अनुसंधान उपलब्धियाँ

नीबू के फलों से निर्मित पीने हेतु तैयार पेय का विकास (आर टी एस) : नीबू से तैयार 6 प्रतिशत रस युक्त आर. टी. एस. पेय पदार्थ तैयार किया गया। फलों को अच्छे प्रकार से धोकर हाइड्रोलिक प्रेस मशीन के द्वारा रस निकाला गया। निकाले गये रस को छानने के बाद शीघ्र सामान्य तापमान पर शीतित कर पाश्चुरिकृत (90° से. ग्रे. , 30 सेकेण्ड) किया गया रस की मात्रा एवं आवश्यक जल की गणना करने के पश्चात् शीतित सिरप में मिलाया गया। पीने योग्य तैयार में कुल घुलनशील ठोस की मात्रा को 14° ब्रिक्स पर स्थिर रखा गया। वर्ग दो के संरक्षक पोटेशियम मेटा बाई सल्फाइड 100 पी.पी.एम. (ई 224) को अच्छी प्रकार मिलाया गया। इसके पश्चात् पेय को 250 मि. ली. के प्लास्टिक (पी. ई. टी.) बोतलों में भरकर सील बंद कर दिया गया। इस उत्पाद की अम्लीयता 0.35 प्रतिशत एवं विटामिन सी की मात्रा 5 मिली. ग्राम/ 100 मि. ली. थी तथा अकिण्वन भूरापन (एन. ई. बी.) 0.136 था। सल्फर डाई आक्साइड की मात्रा 48 पी. पी. एम. थी। यह उत्पाद एफ. एस. एस. ए. आई., भारत सरकार, नई दिल्ली के मानकों के अनुरूप था। भण्डारण क्षमता के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह उत्पाद किण्व मुक्त था तथा 6 महीनों तक फफूंद एवं जीवाणु रहित था। हंटर प्रयोगशाला मापदण्डों को एल., ए., बी. तथा ए./बी. अनुपात को भी दर्ज किया गया तथा उत्पाद आकर्षक एवं ग्राह्य था।



नीबू से तैयार तुरन्त पीने योग्य पेय

नीबू रस आधारित कार्बोनेटेड पेय का विकास: नीबू से रस का निष्कर्षण हाइड्रोलिक प्रेस मशीन के द्वारा किया गया। 90° से. ग्रे. पर 30 सेकेण्ड के लिए पाश्चुरिकृत किया गया। सतह पर तैरने वाले स्वच्छ रस को निकाल कर चासनी में मिलाया गया। वर्ग दो के संरक्षक पोटेशियम मेटा बाई सल्फाइड इसमें मिलाया गया। शुद्ध जल को 4° से. ग्रे. तक ठण्डा किया गया। कार्बोनेशन टैंक गेज में 2.5 कि. ग्रा. प्रति वर्ग सेन्टी मीटर की मात्रा में कार्बन डाई आक्साइड गैस छोड़ी गई। ठण्डे जल को कार्बन डाई आक्साइड मिश्रण टैंक में छोड़ा गया। कार्बिकृत जल को फिलर हेड टैंक में छोड़ा गया तथा आर्थिक रूप से भरी प्लास्टिक बोतलों में कार्बिकृत जल 3.5 कि. ग्रा. प्रति वर्ग से. मी. वर्धित दाब पर गणना किये गये सांद्रित मिश्रण के साथ भरा गया। स्निफिंग समय को मानकीकृत किया गया। बोतलों को भरने के पश्चात् कार्बन डाई आक्साइड के साथ स्निफिट किया गया तथा बोतल को तुरंत सील बंद कर दिया गया। इस पेय में रस की मात्रा 6 प्रतिशत थी। इस पेय पदार्थ की लाभ: लागत गणना भी की गई।



नीबू से तैयार कार्बोनेटेड पेय

इसके भौतिक-रासायनिक मापदण्डों को दर्ज किया गया जिसमें अम्लियता (0.35 प्रतिशत), विटामिन सी की मात्रा (5 मि.लीग्राम/100 मि. ली.) थी तथा अकिण्वन भूरापन (एन. ई. बी.) 0.141 था। सल्फर डाई आक्साइड की मात्रा 48 पी. पी. एम. थी। यह उत्पाद एफ. एस. एस. ए. आई., भारत सरकार, नई दिल्ली के मानकों के अनुरूप था। भण्डारण क्षमता के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह उत्पाद किण्व मुक्त था तथा 6 महीनों तक फफूंद एवं जीवाणु रहित था। हंटर

प्रयोगशाला मापदण्डों को भी एल. ए. बी. तथा ए./बी. अनुपात को भी दर्ज किया गया तथा उत्पाद आकर्षक एवं ग्राह्य था।

संतरा रस आधारित कार्बोनेटेड पेय का विकास : नागपुरी संतरे का रस स्क्रू प्रकार के रस निष्कर्षक मशीन द्वारा निकाला गया। 90° से. ग्रे. पर 30 सेकेण्ड के लिए पाश्चुरिकृत किया गया। सतह पर तैरने वाले स्वच्छ रस को निकाल कर चासनी में मिलाया गया। वर्ग दो के संरक्षक पोटेशियम मेटा बाई सल्फाइड इसमें मिलाया गया। शुद्ध जल को 40 से. ग्रे. तक ठण्डा किया गया। कार्बोनेशन टैंक गेज में 2.5 कि. ग्रा. प्रति वर्ग सेन्टीमीटर की मात्रा में कार्बन डाई आक्साइड गैस छोड़ी गई। ठण्डे जल को कार्बन डाई आक्साइड मिश्रण टैंक में छोड़ा गया। कार्बिकृत उत्पाद को फिलर हेड टैंक में छोड़ा गया तथा आर्थिक रूप प्लास्टिक भरी पी. ई. टी. बोतलों में कार्बिकृत उत्पाद 3.5 कि. ग्रा. प्रति वर्ग से. मी. वर्धित दाब पर भरा गया। स्निफिंग समय को मानकीकृत किया गया। बोतलों को भरने के पश्चात् कार्बन डाई आक्साइड के साथ स्निफिट किया गया तथा बोतल को तुरंत सील बंद कर दिया गया। इस उत्पाद में रस की मात्रा 15 प्रतिशत थी तथा कुल घुलनशील ठोस की मात्रा उत्पाद में 20° ब्रिक्स पर स्थिर रखी गई। इस पेय पदार्थ की लाभ: लागत गणना भी की गई। इसे और मूल्यवधित एवं आकर्षक बनाने हेतु अतिरिक्त रंग एवं खुशबू भी मिलाई गई। इसके भौतिक-रासायनिक मापदण्डों को दर्ज किया गया जिसमें अम्लियता (0.3 प्रतिशत), विटामिन सी की मात्रा (5 मि.ली. ग्राम/ 100 मि.ली.) थी तथा अकिण्वन भूरापन (एन.ई.बी.) 0.978 था। सल्फर डाई आक्साइड की मात्रा 48 पी. पी. एम. थी। यह उत्पाद एफ. एस. एस. ए. आई., भारत सरकार, नई दिल्ली के मानकों के अनुरूप था। भण्डारण क्षमता के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह उत्पाद किण्व मुक्त था तथा 6 महीनों तक फफूंद एवं जीवाणु रहित था। हंटर प्रयोगशाला मापदण्डों को भी एल., ए., बी. तथा ए./बी. अनुपात को भी दर्ज किया गया तथा उत्पाद आकर्षक एवं ग्राह्य था।



नागपुरी संतरे से तैयार कार्बोनेटेड पेय

संस्थानीय गतिविधियाँ / कार्यक्रमों का आयोजन

- संस्थान द्वारा आंतकवाद विरोधी दिवस 21 मई, 2015 को मनाया गया।

प्रौद्योगिकी का वाणिज्यिकरण

- नीबूवर्गीय फलों के पौधों के गुणन हेतु "शूट टिप ग्राफिटिंग" एवं अन्य उक्तक संवर्धन तकनीकियों का वाणिज्यिकरण किया गया एवं मैसर्स एच. यू. गुगले, एग्रो बायोटेक कम्पनी, जामखेड, जिला अहमदनगर, महाराष्ट्र के साथ समझौता मसोदे पर 6 अप्रैल, 2015 को हस्ताक्षर किये गये।
- नीबू एवं संतरों के भण्डारण हेतु श्री सुरेश एन. मंगलपारा, गुजरात को परामर्श सेवा प्रदान की गई।



शूट टिप ग्राफिटिंग तकनीकी हस्तांतरण हेतु समझौता

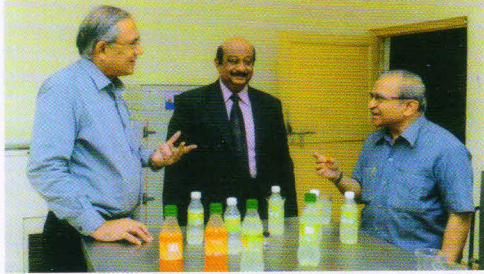
विशिष्ट आंगतुक

- डॉ. जू-ही री, वैज्ञानिक, क्षेत्रीय कार्यालय, कुआलालम्पुर, बायोडाइवर्सिटी इंटरनेशनल द्वारा संस्थान का दौरा 5 मई, 2015 को किया गया।
- डॉ. ए. के. सिंह, प्रबंधन निदेशक, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, गुडगांव द्वारा 3 मई, 2015 को केन्द्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान तथा टी. एम. सी. की पौधशाला का दौरा किया गया।



डॉ. ए.के. सिंह एवं विशिष्ट आंगतुकों द्वारा पौधशाला का दौरा

- डॉ. मोहन खेड़कर, कुलपति, अमरावती विश्वविद्यालय द्वारा 8 जून, 2015 को केन्द्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान, नागपुर का दौरा एवं परस्पर सहयोग पर चर्चा कि गयी।



डॉ. एम. एस. लदानिया प्रक्रिया प्रौद्योगिकी का अमरावती विश्वविद्यालय के आंगतुकों को विवरण प्रस्तुत करते हुए

अन्य प्रसार गतिविधियाँ

प्रदर्शनी

- संस्थान ने अमरावती में 10 से 13 अप्रैल, 2015 को कृषि विकास प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित कृषि विकास, कृषि एक्सपो-2015 में सहभागिता की। वैज्ञानिकों द्वारा नीबूवर्गीय फलो उत्पादन एवं शीत श्रृंखला प्रबंधन विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत किये।

सर्वेक्षण

- श्री लाइसम सिमाई, विधायक, 51-नामपोंग (एस. टी.); डॉ. मोहेश चाई, विधायक, 44-तेजू (एस.टी.) एवं श्री कलींग मोयांग, विधायक, 38-पासीघाट पूर्व (एस.टी.) के आग्रह के अनुरूप डॉ. ए.के. दास, प्रधान वैज्ञानिक (पादप रोग) ने अरुणाचल प्रदेश के खासी संतरा उत्पादन क्षेत्रों के सर्वेक्षण का कार्य 19 से 27 मई, 2015 को किया। इस क्षेत्र में खासी संतरा वृक्षों के समय पूर्व हास के मूलभूत कारणों में उत्पादकों में उचित



डॉ.ए. के. दास, डॉ. मोहेश चाई, विधायक, तेजू, अरुणाचल प्रदेश के साथ



खासी संतरा वृक्ष की कंजांग (चाक्रो) में शैवाक्त एवं काई से प्रभावित शाखायें

जानकारियों की कमी/रोग एवं कीट प्रबंधन तथा रोग मुक्त रोप सामग्री की अनुपलब्धता, अपर्याप्त पोषण एवं जल प्रबंधन पाया गया।

- कृषि विभाग के अनुरोध पर डॉ. एम. एस. लदानिया, निदेशक, डॉ. ए. के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान) एवं डॉ. ए. डी. हुच्चे, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी) द्वारा मोजा उमरखेड़, तहसील मोर्शी, जिला अमरावती में नीबूवर्गीय फलों के लिए उत्कृष्टता केन्द्र (सी. ओ. ई.) की स्थापना हेतु भूमि सर्वेक्षण का कार्य 19 जून, 2015 को किया। यह सी.ओ. ई. महाराष्ट्र राज्य कृषि विभाग द्वारा स्थापित किया जायेगा। इस रिपोर्ट को कृषि विभाग को प्रस्तुत किया गया।

किसानों द्वारा संस्थान का दौरा

- 14 अप्रैल, 2015 को जिला, डिंडोरी, मध्य प्रदेश से आये 60 कृषक महिलाओं को नीबू उत्पादन के विषय पर संस्थान द्वारा जानकारी प्रदान की गई।
- मध्य प्रदेश के विभिन्न जिलों से दिनांक 4, 13, 15, 24 अप्रैल एवं 14, 18, 20 मई, 2015 को आये 120 किसानों ने संस्थान का दौरा किया।
- महाराष्ट्र के जिला अकोला के 2 किसानों एवं यवतमाल के 7 किसानों ने 10 अप्रैल एवं 2 मई, 2015 को संस्थान का दौरा किया।

सम्मन

- डॉ. एम. एस. लदानिया, निदेशक सी. एस. आई. आर.-नीरी के 58वें स्थापना दिवस कार्यक्रम में 8 अप्रैल, 2015 को प्रमुख अतिथि थे। डॉ. एम. एस. लदानिया ने पर्यावरण से संबंधित समस्याओं पर विचार व्यक्त किये एवं इसमें जन सहयोग की अपील की। आपने सी. एस. आई. आर.-नीरी की उपलब्धियों की सराहना की।
- एम. डी., एम. एस. एच. एम. पी. बी. एवं कृषि आयुक्त, महाराष्ट्र के अनुरोध पर भा. कृ. अनु. प.- के. नी. फ. अनु. सं. ने नागपुर महाविद्यालय में इन्डो-इजराइल कार्य योजना के अंतर्गत स्थापित नीबूवर्गीय फलों पर उत्कृष्टता केन्द्र के मूल्यांकन का कार्य किया। डॉ. (श्रीमती) एन. विजयाकुमारी, डॉ. ए. डी. हुच्चे एवं डॉ. ए. के. दास ने कृषि महाविद्यालय के प्राध्यापकों के साथ उत्कृष्टता केन्द्र के कार्यों की 20 मई, 2015 को समीक्षा की।

आयोजित बैठकें

- राजभाषा बैठक:** राजभाषा की तिमाही बैठक का आयोजन 4 अप्रैल, 2015 को किया गया।
- संस्थान अनुसंधान समिति बैठक:** के. नी. फ. अनु. सं., नागपुर के 27वें संस्थान अनुसंधान समिति की बैठक 16-17 अप्रैल, 2015 को डॉ. एम. एस. लदानिया, संस्थान के निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में सभी वैज्ञानिक, डॉ. ए. के. दास, सदस्य सचिव उपस्थित थे। विषय विशेषज्ञ डॉ. टी. बी. एस. राजपूत एमेरिटस वैज्ञानिक, डब्ल्यू. टी.सी., आई. ए. आर. आई., नई दिल्ली; डॉ. आर. पलानीअप्पन, सेवामुक्त प्रधान वैज्ञानिक (आई.आई.एच.आर.), बैंगलूरु, डॉ. सी. अश्वथ, प्रधान वैज्ञानिक (पुष्प कृषि विभाग), आई. आई. एच. आर., बैंगलूरु भी आई. आर. सी. बैठक में उपस्थित थे। कुल 57 अनुसंधान कार्यक्रमों पर चर्चा हुई।



डा. एम. एस. लदानिया, निदेशक एवं अध्यक्ष, संस्थान अनुसंधान समिति, विशेषज्ञों एवं वैज्ञानिकों के साथ

- **नीबूवर्गीय फल उत्पादक किसानों की बैठक:** नीबूवर्गीय फलों पर तकनीकी मिशन (टी.एन.सी.) छिंदवाड़ा के लिए जे. एन. के. वी. वी., क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र, छिंदवाड़ा में 18 अप्रैल, 2015 को नीबूवर्गीय फल उत्पादकों के लिए प्रौद्योगिकीयों पर दिशा-निर्देश हेतु आयोजित की गई। डॉ. एम. एस. लदानिया, निदेशक, के. नी. अनु. फ. सं., नागपुर एवं मिशन लीडर, टी. एम. सी. इसके प्रमुख अतिथि थे। डॉ. एस. एस. तोमर, निदेशक अनुसंधान सेवायें, जे. एन. के. वी. वी., जबलपुर नें इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की जिसमें 50 से अधिक नीबूवर्गीय फल उत्पादक किसानों ने भाग लिया।



श्री अतुल पटने और अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा पौध शाला का दौरा



डा. एम.एस. लदानिया, निदेशक किसानों को संबोधित करते हुए



किसानों की पौधशाला को भेंट

- **संस्थान प्रबंधन समिति बैठक:** के. नी. फ. अनु. सं., नागपुर के 31वीं आई. एम. सी. (संस्थान प्रबंधन समिति) बैठक का आयोजन 23 जून, 2015 को डॉ. एम. एस. लदानिया, निदेशक, के. नी. फ. अनु. सं., नागपुर की अध्यक्षता में किया गया। इस बैठक में उपस्थित सदस्यों में डॉ. डी. एम. मानकर, निदेशक अनुसंधान, डॉ. पी. डी. के. वी., अकोला; श्री सुनील एस. शिंदे, पूर्व विधायक, सावरगाँव, नरखेड, नागपुर; डॉ. संध्या क्रांति, विभाग प्रमुख, फसल सुरक्षा विभाग, सी. आई. सी. आर., नागपुर; डॉ. ए. के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान), के. नी. फ. अनु. सं., नागपुर; डॉ. नचिकेत कोतवालीवाले, प्रधान वैज्ञानिक (ए. एस. एवं पी. ई.), सी. आई. ए. ई., भोपाल; श्री आर. वी. चलवाड़े, एस. ए. ओ. नागपुर विभाग; संस्थान के श्री वाय. वी. सोरटे, ए. एफ. एवं ए. ओ., सत्र वित्त अधिकारी एवं सदस्य सचिव श्री एस. एम. सहारे, प्रशा. अधि. सम्मिलित थे।

“सूक्ष्म सिंचाई एवं फर्टिगेशन” पर हो रहे अनुसंधान कार्यों को प्रस्तुत किया गया तथा संस्थान प्रबंधन से संबंधित कई मामलों पर चर्चा की गई।



आई. एम. सी. की बैठक प्रगति पर



डॉ. डी. के. घोष, प्रधान वैज्ञानिक आय.एम.सी. सदस्यों के साथ चर्चा करते हुए

- राज्य कृषि विभाग, नागपुर के द्वारा जलवायु परिवर्तन, रोग मुक्त पौध सामग्री इत्यादि विषयों पर चर्चा हेतु बैठक 24 जून, 2015 को आयोजित किया गया। इस बैठक की अध्यक्षता श्री अतुल पटने, भारतीय प्रशा. सेवा निदेशक (बागवानी), भारत सरकार एवं संस्थान के निदेशक डॉ. एम. एस. लदानिया द्वारा की गई।

मानव संसाधन विकास

- डॉ. ए. ए. मुरकुटे, वरिष्ठ वैज्ञानिक (बागवानी) ने “कृषि अनुसंधान प्रकल्पों की प्राथमिकता निर्धारण, अनुविक्षण एवं मूल्यांकन (पी. एम. ई)” पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, नार्म, हैदराबाद, 2 से 6 जून, 2015 में भाग लिया।

सुशासन/स्वच्छ भारत अभियान

- कर्मचारियों को पीने हेतु स्वच्छ जल उपलब्ध कराने के लिए एक भूमिगत पानी की टंकी का निर्माण किया गया।
- सभी प्रयोगशालाओं, अनुभागों एवं फार्म में गीले एवं सूखे कचरे के लिए हरे एवं नीले रंग के कचरा पात्र लगाये गये।

कार्मिक

नियुक्तियाँ

- सुश्री नेहा ए. ठाकरे को वरिष्ठ अनुसंधान सहायक, के पद पर 10 अप्रैल, 2015 से फाइटाफथोरा पर आउट रिच प्रकल्प के अंतर्गत नियुक्त किया गया।

सुझाव/प्रतिसूचना

नीबूवर्गीय फलों में ग्रीष्म काल में जल प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण है। नीबू के हस्त बहार एवं संतरा तथा मोसंबी के लिए अम्बीया बहार फसल की जलापूर्ति करना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि मध्य भारत एवं देश के अन्य भागों में तापमान 47 डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुँच जाता है। देश के मध्य एवं उत्तर-पश्चिम मैदानों में फलदार वृक्षों की जल आवश्यकता 230-250 लीटर प्रति वृक्ष प्रति दिन तक हो जाती है जो कि वृक्षों की फलधारण क्षमता एवं उम्र पर आधारित होती है। नये वृक्षों में जल की आवश्यकता कम होती है। देश के दक्षिण एवं उत्तर-पूर्व क्षेत्रों के ठण्डे स्थानों पर अर्थात् पहाड़ों पर लगाये गये उद्यानों में मानसून के विलंब से तनाव उत्पन्न हो जाता है। पहाड़ी क्षेत्रों के नीबूवर्गीय फल उद्यान जलापूर्ति हेतु केवल वर्षा पर निर्भर होते हैं तथा इन क्षेत्रों में वर्षा का प्रारंभ अप्रैल माह से हो जाता है। जलवायु परिवर्तन अवस्थाओं के कारण वर्षा का आगमन पिछले कई वर्षों से विलंब से हो रहा है जिससे उत्पन्न तनाव के कारण वृक्षों में शीघ्र हास हो जाता है। इसको देखकर सिंचाई की बूंद-बूंद प्रणाली को तुरंत अपनाया अत्यंत आवश्यक है तथा लघु एवं सीमांत किसानों द्वारा सरलता से खरीदे जाने हेतु नीतियों में आवश्यक परिवर्तन करना होगा।

सम्पादनकर्ता : डॉ. एम.एस. लदानिया, निदेशक; डॉ. आर. के. सोनकर, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी); डॉ. आशुतोष मुरकुटे, वरिष्ठ वैज्ञानिक (बागवानी) एवं डॉ. अशोक कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (पौधारोग विज्ञान)

प्रकाशक : डॉ. एम.एस. लदानिया, निदेशक, सी.सी.आर.आय., नागपुर - 440033, महाराष्ट्र
नीबूवर्गीय फल समाचार पत्र, केन्द्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान का अधिकारिक समाचार पत्र है

डाक पता : पो.बाक्स न. 464, शंकर नगर, पोस्ट ऑफिस, अमरावती रोड, नागपुर-440010 (महाराष्ट्र)

फोन नं. : 0712-2500249, 2500615, 2400813 **फैक्स :** 0712-2500813

वेबसाइट: www.ccringp.org.in **ईमेल:** citrus8_ngp@sancharnet.in, director.ccri@icar.gov.in, dirnrcngp@gmail.com

मुद्रित : एस्कस् स्केना ग्राफिक, गुजरवाडी, नागपुर